जिनशासन की प्रभावना हेतु वर्तमान में संचालित पाठशाला को कैसे सुचारू एवं सारगर्भित रूप से चलाया जाये

धन्य है वे माता-पिता जो अपनी संतान को भौतिक धन वैभव के साथ-साथ धर्म के संस्कार भी देते हैं. लौकिक शिक्षा केवल जन्म की ही समस्या का समाधान देगी, वह भी **भाग्योदय साथ हो तो**; पर तत्वज्ञान की शिक्षा तो जन्म जन्मांतर के दुखों को दूर करने वाली है. दुनिया में आज भी गुणों का ही आदर है, धन वैभव का नहीं. भले ही तुम धनी हो पर तुम्हारे धन से दुनिया को क्या लेना देना?

बालकों को लौकिक भौतिक विज्ञान की शिक्षा दिलाने के पूर्व तत्वज्ञान की शिक्षा एवं सदाचार के संस्कार देना चाहिए जो उनके सर्वांगीण व्यक्तित्व के विकास में सहायक हो. बालको को सर्वप्रथम धार्मिक और आध्यात्मिक विद्या ही पढ़ाना चाहिए क्योंकि बालक सर्वप्रथम जो सीख लेता है उसका कोमल हृदय वैसा ही मान लेता है. वह तो स्वभाव से ही भावुक और कोमल ह्रदय होते हैं. आज के होनहार बालक ही तो कल के भारत के भाग्य विधाता, राष्ट्र के नायक और देश के भावी कर्णधार बननेवाले है

➢ **पाठशाला का उद्देश्य**

- बालकों को जैनदर्शन के अनुसार जीवन जीना सीखाना चाहिए जिससे वह वर्तमान में तो पूर्ण निराकुल, अत्यंत शांत और सुखी रहेंगे ही उनका अनंत भविष्य भी पूर्ण सुखमय, अतींद्रिय आनंदमय हो जाएगा. जैनदर्शन और कुछ नहीं मात्र सुखद जीवन जीने की अद्भुत कला है
- भारतीय सभ्यता, श्रमण संस्कृति, नैतिक शिक्षा और अहिंसक सदाचारी जीवन जीने की कला में छात्रों को निपुण किया जाना चाहिए
- वीतराग विज्ञान की महिमा से छात्रों को परिचित कराया जाना चाहिए
- उन्हें समझाना होगा की मुख का सर्वश्रेष्ठ सौंदर्य प्रसाधन प्रसन्नता ही है. हमें न तो प्रतिकूलता में परेशान दिखाई देना है और न प्रशंसा में हर्षित होना है
- उन्हें यह महामंत्र से भली भांति परिचित कराना होगा कि निराकुल रहने के लिए परिस्थितियों को पलटने की अनधिकार चेष्टा करने के बजाय वस्तुस्वरूप का विचार करके अपने परिणामों को पलट लेने का बहुत सीधा व सरल उपाय जिनागम में ही है.
- षट आवश्यक का महत्त्व और उन्हें पालने की प्रेरणा देना चाहिए.
- उन्हें यह समझाना होगा कि गुरुजनों को आदर, सेवा और समय देना भी जरूरी है
- बालकों को महापुरुषों एवं सतियो के जीवन के सन्दर्भ में सोचने एवं विचार करने के लिए बाध्य किया जाना चाहिए. जीवन परिवर्तन के पीछे मूलतः पौराणिक कथाएं ही होती है जिनमें

पुण्य पाप के फलों की विचित्रता का वर्णन होता है. उनके जीवन के प्रेरक प्रसंग सुकोमल बच्चों पर गहरे संस्कार देने में समर्थ होते हैं.

- **पाठशाला के अध्यापक की विशेषताएं**

गुरु जैसे गरिमामय पद पर सर्वाधिक बुद्धिमान और प्रतिभावान व्यक्ति आना चाहिए क्योंकि अध्यापक न केवल अक्षर ज्ञान देने वाला सामान्य व्यक्ति होता है बल्कि वह बालकों के चतुर्मुखी व्यक्तित्व का विकास करनेवाला एवं उनके चरित्र का निर्माता भी होता है.

यहां तो चेतन आत्माओं को संस्कारित करने का महत्वपूर्ण प्रश्न है इसलिए:

- छात्रों में सदाचार के संस्कार डालने का महान कार्य करनेवाले को न केवल प्रतिभाशाली बल्कि सदाचारी और नैतिक भी होना चाहिए. केवल आदेशों और उपदेशों की भाषा से कभी कोई सुधर नहीं सकता.
- उसे अत्यंत कुशल, मनोवैज्ञानिक, मननशील और जागरुक होना चाहिए
- कठिन से कठिन विषय को सरल से सरल एवं रोचक ढंग से प्रस्तुत करते आना चाहिए
- अपने कर्तव्य को बराबर नियमित रुप से करना चाहिए
- बालकों के भले के लिए सदा अपना सर्वस्व समर्पण करने के लिए तत्पर रहना चाहिए.
- प्रशंसा और प्रोत्साहन सर्वश्रेष्ट पुरस्कार है. यदि कुछ देना ही हो तो जैन धर्म की कहानियां, पुराण, महापुरुषों के चरित्र इ. देवें ताकि बच्चों में पढ़ने के भी संस्कार आ जावे.
- किसी भी काम में सफलता प्राप्त करने के लिए श्रम, साहस, समय और ध्यान का पूरा केंद्रीकरण आवश्यक होता है.
- धार्मिक संस्कारों के प्रचार-प्रसार के काम को सर्वाधिक महत्त्व देना चाहिए इससे बढ़कर दुनिया में और कोई काम नहीं हो सकता
- अध्यापक में प्रेम भरा व्यवहार और निस्वार्थ भाव से सहयोग करने की पवित्र भावना होना चाहिए. यदि विचार नैतिक है तो हर काम नेक है भला है.
- अध्यापक को निर्भय होना चाहिए. निर्भय हुए बिना सत्य कहा नहीं जा सकता और संपूर्ण समर्पण के बिना सत्य सुना व समझा नहीं जा सकता. उसे ऐसे घोड़े पर बैठना पसंद नहीं हो जिसकी लगाम दूसरों के हाथ में हो
- राजनीति में धर्म तो ठीक है पर धर्म में राजनीति आ गई तो वह धर्म को बदनाम कर देती है.

- कौन जाने किस जीव की काल लब्धि आ जावे, किसकी परिणति में कब/क्या परिवर्तन आ जावे, किसका कब/कैसा भाग्योदय हो जावे? **पतित से पावन और पापी से परमात्मा बनने में देर नहीं लगती** इसीलिए सभी छात्रों को बराबर मौका दे.
- जिस तरह पुत्र के आगे बढ़ने से पिता प्रसन्न ही होता है ईर्ष्यालु नहीं; उसी तरह शिष्य भी यदि गुरु से आगे बढ़ता है तो गुरु भी प्रसन्न हीं होता हैं ईर्ष्या नहीं करता. जो शिष्यों से इर्ष्या करें वह गुरु तो वस्तुतः गुरु ही नहीं है

➢ वर्तमान समय अनुसार किस पद्धति से बच्चों को पढ़ाया जाए

बालकों के शिक्षा और संस्कारों के क्षेत्र में पुरुषों की तुलना में महिलाएं अधिक काम कर सकती है. मां को बालक की प्रथम पाठशाला कहा जाता है. अतः महिलाओं में जागृति लाने से यह काम और अच्छी तरह हो सकता है

आज ९०% बालकों के पेरेंट्स बच्चों के मोबाइल/टीवी इ. की ओर झुकाव से परेशान है.

आज हमारे समाज/ देश के सामने सबसे बड़ा प्रश्न यह है की बच्चों का इनके प्रति लगाव कैसे कम हो ताकि उनमे मानसिक प्रगति के साथ साथ शारीरिक प्रगति भी हो. क्यूंकि आज के इस मशीनी युग में मनुष्य भी मशीन की तरह हरदयहीन हो गया है. गैजेट्स के प्रति अति आसक्ति मानव को निर्दयी एवं पापी बना रही हैं. भौतिक समृद्धि और विलासिता से मनुष्य संवेदनशुन्य या शुष्क हो रहा है

सामाजिक संगठन द्वारा कुछ प्रतियोगिताऍ जैसे भाषण, निबंध, चित्रकला, नाटक आदि आयोजित किया जाना चाहिए.

बालकों की एक मंडली बनाई जाए उसमें छुट्टी के दिन सभी बालक एकत्रित हो और उन्हें हर हफ्ते एक टास्क दे और फिर उस टास्क का महत्व समझाए और आपस में डिस्कस करवाए

बच्चों की शरारतों से बचने के लिए दूरदर्शन और भौतिक साधनों का आश्रय लेना ऐसा है जैसे सुरक्षा के लिए कोई चूहा, बिल्ली की शरण ले

सौ. स्वाति रोहित पाटनी, इंदौर